

आश्रयेत्यर्थिर्विद्वान् 4336. PAÑĀT. I, 52. MĀRK. P. 19, 35. BHĀG. P. 5, 23, 11. राजलक्ष्मीश्च तत्पुत्रमाश्रयत् KATHĀS. 9, 17. स लक्ष्याश्रयेते Spr. (II) 3336. v. 1. अश्रयोऽश्रमाश्रित्य 3571. तथा गृहस्थमाश्रित्य वर्तते सर्व आश्रमाः M. 3, 77. देवम् KATHĀS. 12, 179. BHĀG. P. 3, 14, 19. रेवतिमाश्रयित्वा so v. a. an der Seite von Revati, in ihrer Gesellschaft HARIV. 8383. — 3) haften an, beruhen auf: सर्वे गुणाः काञ्चनमाश्रयन्ति Spr. (II) 3414. M. 1, 17. अनाश्रित्येदमाख्यानं कथा भुवि न विद्यते MBH. 1, 307. 651. — 4) sich an einen Ort begeben, med.: आ यज्ञिषे सुविताप्यं अश्रेयताम् RV. 7, 2, 6. निम्नगाम् R. 1, 27. वनानि VIKR. 135. Spr. (II) 5078. पुनस्त्यजते पुनराश्रयते 3085. act.: यथा पर्वतमादीतं नाश्रयन्ति मृगद्विजाः MAITRĀJUP. 6, 18. ग्राममन्त्रार्थमाश्रयेत् M. 6, 43. MBH. 3, 13063. श्रेयमार्गम् Spr. (II) 1430. 2118. ÇĀK. 54, 23. 81, 21. v. 1. BHĀG. P. 3, 39. PAÑĀT. 188, 18. आश्रि-
याय च भूतलम् so v. a. fiel zur Erde BHĀT. 14, 111. 17, 92. वनमाश्र-
यितुम् R. GORR. 2, 7, 27. समुद्रकुलिमाश्रित्य दुर्गे प्रतिवसत्युत MBH. 3, 12063. ÇĀK. 9, 4. VARĀH. BRH. S. 28, 1. PAÑĀT. 56, 9. स गङ्गाद्वारमाश्रित्य निवेशमकरोत् *angelangt bei* MBH. 1, 7781. 5, 7346. R. 1, 73, 9. 2, 46, 1. 3, 11, 2. WEBER, RĪMAT. UP. 337. मक्तो स्थानम् Spr. (II) 4738. आश्रयति (loc. partic.) रज्जुजालकम् so v. a. wenn er steht bei VARĀH. BRH. S. 51, 14. यस्मिन् (वैरे) तपो तपो राश्रयमासो देलामिवाश्रयत् *auf einer Schaukel liegend* RĀGA-TAR. 5, 130. — 5) sich begeben in so v. a. sich überlassen, sich hingeben, zu Etwas greifen, Etwas erwählen; med.: नियमं धारम् R. 7, 17, 18. वैतसो वृत्तिम् KATHĀS. 5, 6. न चैतद्वाक्यमाश्रये so v. a. gut-
heissen, billigen R. GORR. 2, 99, 21. act.: मा शोकं मा च संतापं धैर्यमाश्रय R. SCHL. 2, 72, 52. वैतसीं वृत्तिम् Spr. 3173. संतापम् (II) 1148. कृत्याकृत्यविवेकम् 5826. दासीवम् KATHĀS. 52, 43. धर्ममाश्रय मा तैत्तप्यम् R. 2, 21, 43. धर्मम् PRAB. 9, 4. pass.: संयामे (so zu lesen mit der v. l.) मृत्युरे-
वाश्रयिताम् HIT. 73, 17. मया च शोणवडवात्रपमत्राश्रयिष्यते *ich werde die Gestalt — annehmen* KATHĀS. 37, 162. किंसामाश्रित्य NIR. 14, 8. वि-
द्याम् 9. धर्मम् M. 8, 8. R. 2, 21, 41. पुत्रिकार्थम् BHĀG. P. 4, 1, 2. सत्त्वमा-
श्रित्य केवलम् R. 3, 40, 18. दम्भम् Spr. 3034. कैकेय्या लघु शासनम् (आ-
श्रुत्य ed. Bomb.) R. 2, 58, 23. बलम्, हेतुम् 21, 14. R. GORR. 1, 70, 10. लङ्काबलम् 3, 35, 113. स्वबाहुबलम् MBH. 1, 5579. 5588. Spr. 5346. वृत्तिं वैतसीम् RAGH. 4, 35. BHĀG. P. 4, 26, 5. व्यर्थपाण्डित्यम् PAÑĀT. 94, 24. मित्रभावम् 141, 19. मनुष्यकान्धकाभावम् KATHĀS. 28, 106. कतमत्प्रक-
रणमाश्रित्यैवमाराधयामः ÇĀK. 4, 12. संस्कृतम् *zum Sanskrit greifend*, — *übergehend* MĀRK. 102, 11. ÇĀK. 48, 7. PRAB. 68, 9. DHŪRTAS. 76, 20. 80, 13. 85, 7. erfahren (einen Wandel u. s. w.) von Unbelebtem: एको रसः करुण एव निमित्तभेदाद्भिन्नः पृथक्पृथग्निवाश्रयते विवर्तान् । आवर्त-
बुद्धदतरंगमयान्विकारान्भो यथा UTTARAR. 68, 10. figg. (88, 2. figg.). — 6) treffen, zu Theil werden: ब्रह्मविदो दोषा नाश्रयन्ति कदाचन MAITRĀJUP. 6, 18. पापमेवाश्रयेदस्मान् BHĀG. 1, 36. यदि तावदप्राणी विधिनाश्रयते । अथ प्राणी प्रतिषेधेनाश्रयते PAT. zu P. 8, 3, 72. इहाप्याश्रयते so v. a. *findet auch hier Anwendung, gilt auch hier* SIDDH. K. zu P. 1, 2, 6. — 7) berücksichtigen: न चेम् देहमाश्रित्य वैरं कुर्वति केनचित् so v. a. *um dieses Leibes Willen* Spr. (II) 153. — partic. आश्रित 1) mit act. Bed. a) sich an Jmd lehnd, — *schliessend, Halt und Schutz bei Jmd suchend, Jmd ergeben*, — *untergeben*; mit acc.: यान्मिनाश्रिताकार्षी-
र्विप्रियं सुमहम्म MBH. 1, 5980. कृष्णम् VOP. 6, 50. रामं सर्वात्मना R. 5, VII. Theil.

57, 8. BHĀG. P. 3, 20, 3. 7, 8, 51. मामनाश्रिताः 1, 13, 42. mit gen.: आश्रि-
ताश्चैव लोकस्य विद्विषः (nom. pl.) Spr. (II) 1056. am Ende eines comp.:
कृष्णाश्रित VOP. 6, 50. पराश्रित Spr. 2987. KATHĀS. 18, 128. Verz. d. Oxf.
H. 153, b, 34 (अनाश्रिताः zu lesen). RĀGA-TAR. 4, 691. BHĀG. P. 5, 13, 25. m. Untergebener KUMĀRAS. 3, 1. Spr. (II) 1053. 2495. 3024. 4849.
HIT. 13, 8. 19. 16, 4. चिराश्रित *ein alter Diener* 61, 6. अनाश्रित JĀG. 3, 6 nach STENZLER so v. a. *keinem bestimmten Stande angehörend*. — b) *haftend an, eigen*. (गुणानाम्) तेषामेव समावायः संप्रतं राममाश्रितः R. GORR. 1, 1, 103. सर्वभूताश्रितं वपुः M. 12, 26. देवं रत्नाश्रितम् VARĀH. BRH. S. 80, 1. इव्याश्रित (गुण) AK. 3, 4, 23, 19. BHĀSHĀP. 85. 88. SARVADARÇANAS. 107, 21. fig. 132, 5. 13. तत्रधर्माश्रिता मतिम् R. 2, 21, 43. *abhängig* KAP. 1, 125. SĀMĀHJAK. 10. वेदे *beruhend auf* BUĀG. P. 4, 4, 20. सत्ये ऽमृतम् Spr. (II) 3377. राष्ट्रं बाहुबलाश्रितम् M. 9, 255. Spr. (II) 616. ष-
डाश्रितं शरीरम् Ind. St. 2, 66; vgl. M. 1, 17. — c) *bezüglich auf, betref-
fend*; mit acc.: मामाश्रितानि कान्याहुः R. 7, 43, 5. am Ende eines comp.: भोष्माश्रिताः कथाः MBH. 13, 1768. HARIV. 9638. R. 4, 20, 17. 7, 71, 6. KATHĀS. 49, 2. 123, 298. Verz. d. Oxf. H. 82, a. No. 138, ÇI. 11. MĀRK. P. 109, 29. BHĀG. P. 4, 16, 26. Schol. zu P. 1, 1, 56. 62. — d) *an einen Ort sich begeben habend, weilend —, sitzend —, lie-
gend —, stehend —, befindlich —, gelegen in, an, auf* (vgl. गत); mit acc.: के वते शरते वनमाश्रिताः MBH. 1, 5937. JĀG. 3, 192. R. 1, 61, 3. 2, 24, 11. 53, 12. 58, 6. 60, 20. 67, 5. 74, 6. R. GORR. 2, 110, 22. दुर्गाणि M. 7, 72. वनस्पतिम् RAGH. 12, 21. तरुच्छायाम् 1, 75. Spr. (II) 3333. KA-
THĀS. 20, 144. WEBER, RĪMAT. UP. 333. शिलातलम् MBH. 3, 2412. भूतलम् 5, 7187. रथश्रेष्ठम् 1, 8187. गजपृष्ठम् VARĀH. BRH. S. 44, 27. आसनम् BHĀG. P. 2, 2, 15. आदित्यपथम् MBH. 1, 1148. दक्षिणां ककुभम् VARĀH. BRH. S. 47, 8. 88, 43. BRH. 23, 17. मित्रे परमस्नेहकोटिमाश्रितं *gelangt zu* PAÑĀT. 76, 8. आश्रममत्तयम् RAGH. 8, 14. *stehend bei* so v. a. *verbunden mit* R. 3, 58, 26. mit loc.: कपटकेषु (यक्षाः) VARĀH. BRH. 22, 1. कृत्पुष्करे MAITRĀJUP. 6, 1. Spr. (II) 1754. BHĀG. P. 4, 6, 16. कापे रोमराजयः R. 3, 49, 33. am Ende eines comp.: दुर्गाश्रित M. 7, 73. BHĀG. P. 5, 1, 18. fig. तीर्थश्रित Spr. 2808. VARĀH. BRH. S. 5, 68. 10, 18. 32, 22. द्वारश्रित Spr. (II) 5509. शयनीयाश्रित KATHĀS. 28, 142. सरोवरं तुङ्गाद्रिकटाश्रितम् 23, 247. या-
म्याश्रित *ein Komet* VARĀH. BRH. S. 11, 19. 103, 6. BRH. 6, 9. 10, 4. RĀGA-TAR. 4, 269. 5, 123. ÇUK. in LA. (III) 32, 17. PAÑĀT. 81, 22. कालिन्दी पशान्मुखाश्रिताम् so v. a. *den Lauf nach Westen genommen habend* R. 2, 53, 4. अनन्याश्रितद्रव्यं so v. a. *dessen Vermögen nicht auf einen An-
dern übergegangen ist* JĀG. 2, 51. येषां धनानि सकलार्थिजनाश्रितानि so v. a. *dessen Vermögen allen Armen gehört* Spr. (II) 5576. — e) *sich überlassen —, sich hingeben —, zu Etwas gegriffen —, Etwas erwählt habend*; mit acc.: पाषाणम् M. 5, 90. BHĀG. P. 4, 2, 30. अश्वत्थम् Spr. (II) 481. शत्रुषड्गम् 2740. धर्मम् 3370. ब्राह्मणीं वृत्तिम् MBH. 1, 6951. RĀGA-TAR. 6, 22. माध्यस्थ्यम् M. 4, 257. प्रव्रज्याम् KUMĀRAS. 6, 6. व्यावहारीम् BHĀT. 7, 42. प्रीतिम् RĀGA-TAR. 3, 150. अहंकारम् PAÑĀT. 76, 2. अन्यद-
सत् BHĀG. P. 3, 2, 10. पक्ष्मनाश्रितः Spr. (II) 1261. स्वबाहुबलम् R. 2, 44, 12. मानुषीं तनुम् BHĀG. 9, 11. 13, 14. MBH. 3, 15833. RAGH. 1, 13. LA. (III) 87, 20. am Ende eines comp.: धर्माश्रित VARĀH. BRH. S. 101, 8. — f) *Rücksicht nehmend auf*: अनाश्रितः कर्मफलम् BHĀG. 6, 1. R. 3, 10,